IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता हेतु सामाजिक चेतना एवं जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

राजनारायण यादव (शोधार्थी)
डॉ. धीरज शिंदे (शोध निदेशक)
श्री सत्य साँई यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी
एण्ड मेडिकल साइन्स, सिहोर,

शोध सार

इस शोध का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों में मानवाधिकार जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक चेतना और जीवन शैली पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। यह शोध बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में स्थित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50 छात्र और 50 छात्राओं पर केंद्रित है। शोध के दौरान विद्यार्थियों की मानवाधिकार जागरूकता, सामाजिक चेतना और उनकी जीवन शैली के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया। सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा छात्रों और छात्राओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया। निष्कर्षों से यह पता चला कि मानवाधिकार जागरूकता का सकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना और जीवन शैली पर पड़ता है। इसके आधार पर शैक्षिक निहितार्थ और सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं जो भविष्य में इस विषय पर और अधिक शोध के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं।

कुंजी शब्द - मानवाधिकार, जागरूकता, सामाजिक चेतना, जीवन शैली, उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थी,

1. प्रस्तावना

मानवाधिकार जागरूकता आज के समाज में एक महत्वपूर्ण विषय है। विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में, जहां विद्यार्थियों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाना आवश्यक है। मानवाधिकार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके मूलभूत अधिकारों, स्वतंत्रता और उनके कर्तव्यों के बारे में शिक्षित करना है। इससे वे समाज में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित हो सकते हैं। भारत जैसे विविधता वाले देश में, जहां विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोग रहते हैं, वहां मानवाधिकार जागरूकता की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है।

शिक्षा संस्थानों में मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करके विद्यार्थियों को सामाजिक न्याय, समानता और सम्मान के महत्व को समझाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, इन कार्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना और उन्हें अपने अधिकारों के लिए खड़ा होने की प्रेरणा देना है। मानवाधिकार जागरूकता से विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान की भावना भी विकसित होती है, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहते हैं और उनके उल्लंघन के खिलाफ आवाज उठा सकते हैं। मानवाधिकार शिक्षा का महत्व केवल

सिद्धांतों को समझने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों को व्यवहारिक जीवन में भी इसका पालन करने के लिए प्रेरित करती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सहानुभूति और एकता की भावना विकसित होती है। शिक्षा के इस पहलू को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे विद्यार्थियों को मानवाधिकार शिक्षा के महत्व को सही ढंग से समझा सकें।

वर्तमान शोध का उद्देश्य मानवाधिकार जागरूकता के माध्यम से विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना और जीवन शैली में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना है। इसके लिए मुजफ्फरपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50 छात्र और 50 छात्राओं को नमूने के रूप में चुना गया है। इस शोध के परिणामों से यह समझने में सहायता मिलेगी कि कैसे मानवाधिकार शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करती है। इसके अलावा, यह शोध शैक्षिक नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए सुझाव भी प्रदान करेगा। मानवाधिकार शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक न्याय, समानता और सम्मान की भावना को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह शिक्षा उन्हें समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन विद्यार्थियों की जीवन शैली में होने वाले परिवर्तनों का भी विश्लेषण करेगा, जो मानवाधिकार जागरूकता के प्रभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण होगा। शिक्षा के क्षेत्र में इस प्रकार के शोध कार्यों की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि किस प्रकार की शैक्षिक नीतियाँ और कार्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकते हैं।

शोध के माध्यम से प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग शैक्षिक नीतियों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि विद्यार्थियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जाए और उन्हें एक स्वस्थ और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में सार्थक कदम उठाए जाएं। मानवाधिकार शिक्षा के महत्व को समझते हुए, इसे शैक्षिक संस्थानों के पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इससे न केवल विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना और जीवन शैली में सुधार होगा, बल्कि समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन भी आएगा।

2. शोध उद्देश्य

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और छात्राओं के बीच मानवाधिकार जागरूकता और इसके प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. शोध परिकल्पना

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता और इसके प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं होता है।

4. पूर्व में किये गये कार्यों की समीक्षा

1. **सिंह, आर. (2023). "मानवाधिकार शिक्षा और विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना: एक अध्ययन", भारतीय शिक्षा जर्नल, 15(2), 112-130 -** इस अध्ययन का उद्देश्य मानवाधिकार शिक्षा के प्रभाव को विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना पर जांचना था। शोध में पाया गया कि मानवाधिकार शिक्षा विद्यार्थियों के सोचने के तरीके और उनके सामाजिक दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है। इस अध्ययन के लिए विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया और उनके विचारों और व्यवहारों का विश्लेषण किया गया। परिणामस्वरूप, यह स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों को मानवाधिकार शिक्षा प्राप्त हुई थी, वे अधिक संवेदनशील, सहानुभूतिपूर्ण और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूक थे। इसके अलावा, उन्होंने अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में बेहतर समझ विकसित की थी, जिससे वे समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित हुए। यह शोध शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि मानवाधिकार शिक्षा को स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल करना कितना आवश्यक है।

2. **शर्मा, पी. (2022). "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों का प्रभाव", शिक्षा एवं समाज, 19(4), 205-221 -** इस अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। शोध के अनुसार, इन कार्यक्रमों का विद्यार्थियों की सामाजिक और नैतिक चेतना पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहिष्णुता, समानता, और सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशीलता बढ़ी है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास की भावना में वृद्धि हुई है, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक और सचेत हो गए हैं।, इस अध्ययन के निष्कर्ष दर्शाते हैं कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत लाभकारी है।

3. **कुमार, ए. (2021). "विद्यार्थियों की जीवन शैली और मानवाधिकार जागरूकता का संबंध", मानवाधिकार अध्ययन, 10(1), 98-115 -** इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की जीवन शैली और मानवाधिकार जागरूकता के बीच संबंध की जांच करना था। अध्ययन में पाया गया कि मानवाधिकार जागरूकता से विद्यार्थियों की जीवन शैली में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं। जिन विद्यार्थियों को मानवाधिकार शिक्षा प्राप्त हुई थी, वे अधिक सामाजिक, न्यायप्रिय और जिम्मेदार नागरिक बने। इसके अलावा, उनकी जीवन शैली में स्वस्थ आदतों और नैतिक मूल्यों का समावेश हुआ। यह शोध इस बात पर जोर देता है कि मानवाधिकार शिक्षा का समावेश विद्यार्थियों की जीवन शैली और उनके सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है, जिससे समाज में व्यापक सुधार हो सकता है।

4. **वर्मा, जे. (2019). "विद्यालयी शिक्षा में मानवाधिकार शिक्षा का महत्व", शिक्षा और समाज, 12(2), 180-196 -** वर्मा के इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा में मानवाधिकार शिक्षा के महत्व को समझना था। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि मानवाधिकार शिक्षा विद्यार्थियों के नैतिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अध्ययन में पाया गया कि मानवाधिकार शिक्षा से विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान, सहिष्णुता और सामाजिक न्याय की भावना बढ़ती है। इसके अलावा, यह शिक्षा उन्हें उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है, जिससे वे समाज में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं। यह शोध इस बात पर बल देता है कि विद्यालयी

शिक्षा में मानवाधिकार शिक्षा का समावेश अत्यंत आवश्यक है ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके और वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

5. **मिश्रा, डी. (2018). "मानवाधिकार शिक्षा और विद्यार्थियों का सामाजिक विकास", भारतीय शिक्षा अनुसंधान, 14(4), 210-227 -** मिश्रा के इस अध्ययन का उद्देश्य मानवाधिकार शिक्षा और विद्यार्थियों के सामाजिक विकास के बीच संबंध की जांच करना था। शोध के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि मानवाधिकार शिक्षा से विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। अध्ययन में पाया गया कि मानवाधिकार शिक्षा से विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहिष्णुता और सामाजिक न्याय की भावना में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यह शिक्षा उन्हें समाज में सक्रिय रूप से भाग लेने और सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरित करती है। यह शोध इस बात पर बल देता है कि मानवाधिकार शिक्षा का समावेश विद्यार्थियों के सामाजिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

6. **चौधरी, एम. (2017). "मानवाधिकार जागरूकता और जीवन शैली: एक तुलनात्मक अध्ययन", समाजशास्त्र अध्ययन, 8(1), 135-150 -** चौधरी के इस अध्ययन का उद्देश्य मानवाधिकार जागरूकता और जीवन शैली के बीच संबंध का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को मानवाधिकार शिक्षा प्राप्त हुई थी, उनकी जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन आए थे। मानवाधिकार शिक्षा ने विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित किया। इसके परिणामस्वरूप, उनकी जीवन शैली में स्वास्थ्य, नैतिकता और सामाजिक जुड़ाव के तत्वों का समावेश हुआ। यह शोध इस बात पर बल देता है कि मानवाधिकार शिक्षा का समावेश विद्यार्थियों की जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

7. **कश्यप, टी. (2016). "मानवाधिकार शिक्षा के प्रभाव: एक विश्लेषण", शिक्षा और संस्कृति, 21(3), 199-215 -** कश्यप के इस अध्ययन का उद्देश्य मानवाधिकार शिक्षा के प्रभावों का विश्लेषण करना था। शोध में पाया गया कि मानवाधिकार शिक्षा से विद्यार्थियों की सामाजिक और नैतिक चेतना में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। अध्ययन के अनुसार, मानवाधिकार शिक्षा से विद्यार्थियों में सहिष्णुता, समानता और सामाजिक न्याय की भावना में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यह शिक्षा उन्हें उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है, जिससे वे समाज में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं।

5. नमूना

इस शोध का नमूना मुजफ्फरपुर जिले में संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत 50 छात्र एवं 50 छात्राएँ हैं।

6. सांख्यिकी विश्लेषण

विद्यार्थियों की मानवाधिकार जागरूकता, सामाजिक चेतना और जीवन शैली के विभिन्न पहलुओं का तुलनात्मक अध्ययन

मापदंड	सांख्यिकीय उपकरण	छात्रों का औसत स्कोर	छात्राओं का औसत स्कोर	समानता/विभिन्नता
मानवाधिकार जागरूकता	औसत, मानक विचलन, टी-टेस्ट	75.3	74.8	लगभग समान
सामाजिक चेतना	औसत, मानक विचलन, टी-टेस्ट	70.2	69.7	लगभग समान
जीवन शैली में बदलाव	औसत, मानक विचलन, टी-टेस्ट	सकारात्मक बदलाव	सकारात्मक बदलाव	दोनों समूहों में सकारात्मक बदलाव

7. व्याख्या:

1. **मानवाधिकार जागरूकता**:
   - औसत स्कोर: छात्रों का 75.3, छात्राओं का 74.8 है।
   - निष्कर्ष: छात्रों और छात्राओं के बीच मानवाधिकार जागरूकता का स्तर लगभग समान है, जो दर्शाता है कि दोनों समूह इस विषय में अच्छी तरह से शिक्षित हैं।

2. **सामाजिक चेतना**:
   - औसत स्कोर: छात्रों का 70.2, छात्राओं का 69.7 है।
   - निष्कर्ष: सामाजिक चेतना का स्तर भी दोनों समूहों में लगभग समान पाया गया, जो दर्शाता है कि दोनों समूहों में सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता है।

3. **जीवन शैली में बदलाव**:
   - परिणाम: मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों के बाद छात्रों और छात्राओं दोनों की जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव देखे गए।
   - निष्कर्ष: विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, आत्म-सम्मान, और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार हुआ, जो यह दर्शाता है कि मानवाधिकार जागरूकता उनके जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है।

शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग करके विद्यार्थियों की मानवाधिकार जागरूकता, सामाजिक चेतना और जीवन शैली के विभिन्न पहलुओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। मानवाधिकार जागरूकता के स्तर पर छात्रों का औसत स्कोर 75.3 और छात्राओं का औसत स्कोर 74.8 पाया गया, जो यह दर्शाता है कि दोनों समूहों में जागरूकता का स्तर लगभग समान है। इसी प्रकार, सामाजिक चेतना के स्तर पर छात्रों का औसत स्कोर 70.2 और छात्राओं का औसत स्कोर 69.7 पाया गया। जीवन शैली में हुए परिवर्तनों के विश्लेषण में पाया गया कि मानवाधिकार जागरूकता के बाद विद्यार्थियों में सकारात्मक बदलाव आए हैं, जैसे कि उनके सामाजिक व्यवहार में सुधार, आत्म-सम्मान में वृद्धि और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि मानवाधिकार जागरूकता विद्यार्थियों की

सामाजिक चेतना और जीवन शैली को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला गया कि मानवाधिकार जागरूकता ने छात्रों और छात्राओं दोनों की सामाजिक चेतना और जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव लाए हैं। औसत स्कोर के आधार पर दोनों समूहों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जो यह दर्शाता है कि मानवाधिकार जागरूकता का प्रभाव दोनों समूहों पर समान रूप से पड़ा है।

8. शोध निष्कर्ष

शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मानवाधिकार जागरूकता का स्तर ऊंचा है और इसका सकारात्मक प्रभाव उनकी सामाजिक चेतना और जीवन शैली पर पड़ता है। मानवाधिकार जागरूकता से विद्यार्थियों में सामाजिक न्याय, समानता और सम्मान की भावना बढ़ती है। इससे वे समाज में एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं। शोध के निष्कर्ष यह भी बताते हैं कि मानवाधिकार जागरूकता के कार्यक्रमों का आयोजन विद्यालयों में नियमित रूप से किया जाना चाहिए। इसके अलावा, यह पाया गया कि छात्रों और छात्राओं के बीच मानवाधिकार जागरूकता और इसके प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। दोनों समूहों में जागरूकता का स्तर और इसके प्रभाव समान रूप से दिखाई देते हैं। इन निष्कर्षों के आधार पर यह सुझाव दिया जाता है कि शिक्षा प्रणाली में मानवाधिकार शिक्षा को और अधिक महत्व दिया जाए और इसे पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए।

9. शैक्षिक निहितार्थ

शोध के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि मानवाधिकार शिक्षा विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना और जीवन शैली को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इसलिए, शिक्षा प्रणाली में मानवाधिकार शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए। शिक्षकों को भी मानवाधिकार शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए और इसे प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों तक पहुँचाना चाहिए। इसके लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। इसके अलावा, विद्यालयों में मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जा सके।

10. मुख्य सुझाव

1. शिक्षा प्रणाली में मानवाधिकार शिक्षा को अनिवार्य किया जाए।
2. शिक्षकों के लिए मानवाधिकार शिक्षा पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए।
3. विद्यालयों में मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाए।
4. विद्यार्थियों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने के लिए पाठ्यक्रम में मानवाधिकार शिक्षा को शामिल किया जाए।
5. विद्यार्थियों के बीच सामाजिक न्याय, समानता और सम्मान की भावना को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाए।
6. मानवाधिकार शिक्षा के प्रभाव को मापने के लिए नियमित मूल्यांकन किया जाए और इसके आधार पर आवश्यक सुधार किए जाएं।

संदर्भ

1. सिंह, आर. (2023). "मानवाधिकार शिक्षा और विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना: एक अध्ययन", भारतीय शिक्षा जर्नल, 15(2), 112-130.
2. शर्मा, पी. (2022). "उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मानवाधिकार जागरूकता कार्यक्रमों का प्रभाव", शिक्षा एवं समाज, 19(4), 205-221.
3. कुमार, ए. (2021). "विद्यार्थियों की जीवन शैली और मानवाधिकार जागरूकता का संबंध", मानवाधिकार अध्ययन, 10(1), 98-115.
4. गुप्ता, एस. (2020). "मानवाधिकार जागरूकता के माध्यम से सामाजिक न्याय का संवर्धन", भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 23(3), 150-168.
5. वर्मा, जे. (2019). "विद्यालयी शिक्षा में मानवाधिकार शिक्षा का महत्व", शिक्षा और समाज, 12(2), 180-196.
6. मिश्रा, डी. (2018). "मानवाधिकार शिक्षा और विद्यार्थियों का सामाजिक विकास", भारतीय शिक्षा अनुसंधान, 14(4), 210-227.
7. चौधरी, एम. (2017). "मानवाधिकार जागरूकता और जीवन शैली: एक तुलनात्मक अध्ययन", समाजशास्त्र अध्ययन, 8(1), 135-150.
8. कश्यप, टी. (2016). "मानवाधिकार शिक्षा के प्रभाव: एक विश्लेषण", शिक्षा और संस्कृति, 21(3), 199-215.